विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (VII)

गायब होने से दूसरों से तो गायब हो जाते हैं। दूसरे देख नहीं पाते। पर खुद से भी गायब हो जाते हैं क्या? गायब होकर अपना हाथ देखें तो हाथ दिखाई देगा? दो गायब लोग एक दूसरे को क्या देख सकते हैं? बोलू-कूना के सभी दोस्त गायब होकर छुपाछुपाईल का खेल, खेल सकते हैं? गायब होकर एक दूसरे से कैसे छुपेंगे। जो दिखता होगा उसी की आड़ में छुप जाएँगे। दिखते हुए एक पेड़ के पीछे छुप गए। दिखती हुई चट्टान की आड़ में छुप गए।

दिखती हुई माँ की आड़ में कूना छुप जाए। दिखते हुए बाघ की आड़ में गायब बोलू छुप जाएगा तो भी गायब कूना उसे ढूँढ लेगी। गायब होने से बाघ से डर नहीं लगेगा। गायब होकर बाघ की सवारी की जा सकती है। गायब होकर बौने पहाड़ की गहराई में उतरा जा सकता है क्या? गायब रहते हुए गहराई में गिरेंगे तो चोट लगेगी कि नहीं। और गायब रहते हुए सिक्कों के ढेर में गिरेंगे तो खन्न की आवाज़ होगी कि नहीं। आवाज़ ज़ोर की होगी या धीमे होगी। गायब का वज़न होता है? गायब होने के पहले जितना वज़न था गायब होने पर उतना ही रहेगा। या कुछ ऐसा सूत्र होता होगा कि गायब होने के पहले का वज़न + गायब होने के बाद का वज़न = गायब होने के पहले का वज़न। दूसरा सूत्र कि गायब होने के बाद का वज़न = दिखाई देने के पहले का वज़न।

बोलू शायद बौने पहाड़ की गहराई में उतर सकता था। उसके बड़े होने के किसी एक दिन उसमें यह परिवर्तन आया था कि वह मीठी धुन में गुनगुनाता तो हल्का होने लगता। गुनगुनाना कम करता तो कुछ भारी होने लगता। इसको सन्तुलित कर वह धीरे-धीरे पैराशूट की तरह नीचे गहराई में उतर सकता। अथवा हवा के छोटे-छोटे झोंकों के पंख लगाकर नीचे उतरने का प्रयत्न करे। उतरते ही पंख फैलाने की पर्याप्त जगह मिल जाए। हवा के झोंकों को समेट कर नीचे कूदे और अन्दर फैला ले। पर नीचे की हवा ज़हरीली हो सकती है। दम घुट जाए। रह-रहकर आने वाले हवा के झोंकों की श्रृंखला नीचे उतरने के साथ अन्दर आती रहे। तो खतरा नहीं होगा।

एक हरेवा नाम का पक्षी होता है। हरे रंग का। बुलबुल इतना बड़ा। परन्तु पतरंगी से बिल्कुल भिन्न। हरेवा दूसरे पक्षियों की बोली की नकल करता है। यह कभी जोड़ों में या छोटे झुण्डों में दिखाई देता। एक पेड़ पर अकेले भी। तब जोड़ा पास के दूसरे पेड़ में होता। पेड़ की टहनियों में फुदकता। फुदकने की अनेक कलाबाज़ियाँ दिखाता। इसकी रंग योजना का ताल-मेल हरे पेड़ से इतना होता कि दिखाई नहीं देता। बस बोली की नकल सुनाई देती। लगेगा कि पेड़ पर अनेक पक्षी बैठे हैं जैसे बुलबुल, कोतवाल, शौबीजी, किलकिला, दैयार, दर्ज़ी। और सब एक दूसरे की बोली समझ रहे हैं। एक विमर्श चल रहा है। इस पेड़ के पास एक ठूँठ था। ठूँठ पर पक्षियों की बोली सुनकर नुकीले पंख वाला बाज़ अपने जोड़े के साथ आकर बैठ गया था। यह बाज़ शिकार पकड़ने अपने जोड़े का उपयोग करता है। एक शिकार को हाँकता है और दूसरा झपट्टा मारकर उसे पकड़ता है। हरेवा को जैसे ही भान हुआ कि खतरा है। यह चुप होकर उड़ गया। एक अकेला पक्षी उड़ा। बाकी पक्षी

कोई नहीं था जिनके बोलने की आवाज़ आ रही थी। बाज़ को वहाँ अनेक पक्षियों की आशा थी। हरेवा बच गया।

हरेवा की अपनी बोली कैसी है कोई जान नहीं पाता था। हो सकता है दूसरों की बोली ही उसकी अपनी बोली हो गई हो। दूसरों की बोली बोलते वह अपनी बोली भूल गया था। और सबकी बोली बोलना हरेवा की भाषा हो।

एक दिन एक पेड़ में अकेला हरेवा बैठा था। उस पेड़ में कई चिड़ियों के बोलने की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। बोलू पेड़ के नीचे रुककर चिड़ियों की चहचहाहट में कहीं खोने वाला था। चहचहाहट में खंजन की बोली भी सुनाई दे रही थी। परन्तु सचमुच में वहाँ खंजन चिड़िया नहीं थी। खंजन चिड़िया होती तो बोलू के साथ छुपा छुपाईल का खेलने का उसका मन हो जाता। और यह बोलू के सिर के ऊपर की डाली में बैठ जाती और बोलू को अदृश्य कर देती।

हरेवा की तरह बोलू का एक मित्र था। वह सभी मित्रों की आवाज़ में बोलता था। कभी प्रेमू की आवाज़ में कभी बोलू, मैरा की आवाज़ में। कभी कूना की। पेड़ की आड़ में खड़ा होकर उसने बोलू को प्रेमू की आवाज़ में बुलाया। उसे लगा कि प्रेमू बुला रहा है। तभी उसने मैरा की आवाज़ सुनी, "बोलू इधर आओ।" "हम लोग सब हैं।" बीनू की आवाज़ आई, "मैं भी हूँ।" जैसे कूना शरारत से बोल रही हो, "मैं भी हूँ।" अन्त में छोटू ने जैसे किसी की आवाज़ में नहीं कहा। बोलू इस स्वर को पहचान नहीं पाया। छोटू को उसकी आवाज़ से पहचानना कठिन था। छोटू की आदत जैसे पड़ गई थी कि दूसरे की आवाज़ में बात करे। जब कौन बोल रहा है यह समझ में नहीं आता था तो कुछ देर बाद लगता कि छोटू भी हो सकता है। पर यह कठिन था। क्योंकि जब प्रेमू की आवाज़ आ रही है तो उसे पहले छोटू क्यों समझें। प्रेमू क्यों न समझें।

बोलू इधर-उधर देख रहा था। चारों तरफ घने पेड़ थे। पेड़ों की इतनी आड़ थी कि एक पेड़ की आड़ से निकलते तो दूसरे पेड़ की आड़ में चले जाते। बोलू पास के पेड़ के पीछे गया और देखा कि कोई नहीं है। आठ-दस पेड़ों के पीछे झाँकने के बाद उसे कोई नहीं दिखा तो उसे यह भी लगा कि होंगे पर गायब हैं।

इतने में फिर प्रेमू की आवाज़ आई, "बोलू मैं जा रहा हूँ।"

"मैं भी जा रहा हूँ।" बोलू ने मैरा की आवाज़ सुनी।

"मैं भी जा रही हूँ।" बोलू ने कूना की आवाज़ सुनी। सुन-सुनकर बोलू इधर-उधर देखता। जाता हुआ कोई दिखाई नहीं देता। तभी बोलू को करंज के पेड़ के पीछे हरे रंग की कमीज़ की बाँह दिखी। फिर नहीं दिखी। बोलू चुपके से कुछ बोलते हुए जो समझ में नहीं आ रहा था, उस पेड़ के पास गया। पेड़ के पीछे छोटू खड़ा था। बोलू को अभी भी लग रहा था कि कूना और दूसरे लड़के भी यहीं कहीं होंगे। "प्रेमू कहाँ गया?" बोलू ने पूछा। "प्रेमू चला गया।" प्रेमू की ही आवाज़ में छोटू ने कहा। "बीनू नहीं आया पर बीनू को भी मैंने नहीं सुना।" बोलू ने कहा। "बीनू आया था। बीनू भी चला गया।" बीनू की आवाज़ में छोटू ने कहा। छोटू जब सबके साथ होता तो प्रायः छोटू के अलावा दूसरे चुप होते। लेकिन कभी तो बोलना पड़ता। जैसे छोटू बोलेगा, "मैं जानता हूँ तुम लोग मेरे साथ खेलना पसन्द नहीं करते।" कूना की आवाज़ में वह कहेगा। जब कूना की आवाज़ में यह कह रहा है तो वहाँ बैठी कूना को लगेगा कि उसके साथ तो ऐसा नहीं है। उसके साथ सब खेलना पसन्द करते हैं। वह बोल पड़ेगी, "मेरे साथ खेलना सबको अच्छा लगता है।" "मैं अपने लिए बोल रहा हूँ।" छोटू कहेगा, परन्तु बीनू की आवाज़ में। ऐसी स्थिति में तब यह होता कि तत्काल बीनू जवाब देता, "मेरे साथ खेलने को कोई मना नहीं करता।" "मैं अपने लिए बोल रहा हूँ न।" छोटू कहेगा परन्तु मैरा की आवाज़ में। तब मैरा बोलता, "सच बात है। मैं कुछ बुद्धू हूँ न, इसलिए मेरे साथ खेलना कम पसन्द करते हैं।" तब सब मैरा से एक साथ बोलते जिसमें छोटू भी शामिल होता, "हम सब तुम्हारे मित्र हैं। तुम्हारे साथ खेलना हमको अच्छा लगता है।" सबके एक साथ बोलने में छोटू ने किसकी आवाज़ में कहा यह समझ नहीं आता होगा। हो सकता है सबकी आवाज़ के साथ छोटू अपनी आवाज़ में बोलता हो। उसे लगता हो कि सबके साथ उसकी अपनी आवाज़ होनी चाहिए।

सबके बोलने के बाद जिसमें वह भी शामिल था। "मैं अपने लिए कह रहा था।" बोलू की आवाज़ सुनाई दी पर छोटू बोल रहा था। जब बोलू की आवाज़ सुनाई दी थी तो सबकी दृष्टि बोलू की तरफ गई। बोलू बैठा हुआ था। बोलते हुए चला नहीं था। "छोटू हमको तुम्हारे साथ खेलना अच्छा लगता है।" उठकर चलते हुए बोलू छोटू के पास गया और उसके पास बैठ गया।

इन्हीं सब कारणों से छोटू अधिकतर अकेले खेलना पसन्द करता। अकेले खेलते समय भी इस तरह खेलता कि सब उसके साथ हैं। अकेले खेलते हुए वह अपने मित्रों की आवाज़ में बात करता। कोई छोटू को यदि देख नहीं रहा है कि छोटू अकेला है तो उसे लगेगा बहुत से बच्चे खेल रहे हैं।

छोटू अकेला है। वह बीनू की आवाज़ में बोलता है, "प्रेमू बता आज क्या खेलें।" "नहीं, बीनू तुम बताओ। तुम कभी बताते नहीं तुमको क्या खेलना अच्छा लगता है।" प्रेमू की आवाज़ में छोटू ने कहा। "अच्छा छोटू से पूछते हैं।" बीनू की आवाज़ आती है, "छोटू तो कुछ बोलता नहीं।"

"छोटू क्या बोलेगा। सबकी तरफ से बोलता है। अपनी तरफ से कुछ नहीं बोलता।" प्रेमू की आवाज़ आती है। छोटू फिर प्रेमू की आवाज़ में प्रश्न पूछता है, "बीनू बता मेरे साथ खेलेगा।" इतने प्यार से यह पूछता है कि लगता है कि प्रेमू कितना अच्छा लड़का है। फिर बीनू की आवाज़ में जवाब देता है, "जा मैं तेरे साथ नहीं खेलूँगा।" तब लगता है कि बीनू गन्दा लड़का है। "क्यों नहीं खेलेगा।" छोटू प्रेमू की आवाज़ में पूछता है। "इसलिए कि तू प्रेमू नहीं है। छोटू है।" बीनू की आवाज़ में छोटू बोलता है।

तब कूना की आवाज़ आती है, "बीनू तुझको चिढ़ा रहा है। तेरे साथ ज़रूर खेलेगा।"

इस तरह का खेल छोटू खेलता। अकेले छोटू का खेल जब समाप्त होता तो वहाँ सन्नाटा छा जाता। छोटू बोलू की आवाज़ में बात करता तो जैसे बोलू बात करते हुए चलता है वैसे ही छोटू भी चलता। अकेले छोटू के चुप होते जैसे बहुत से लोग चुप हो जाते।

उड़ती खंजन के नीचे आए लोग, पलक झपकने में जितना समय लगता उतने समय के लिए गायब होते। उनके गायब होने का पता नहीं चलता था। आँख बन्द होने से कुछ दिखाई नहीं देता पर गायब होना दिखना चाहिए। अर्थात् जो नहीं दिख रहा है वह देखने से नहीं दिख रहा है। अगर देर तक आँख बन्द कर लें तब देर तक नहीं दिखना देर तक गायब होने जैसा नहीं। गायब होने में जो गायब होता है बस वही नहीं दिखाई देता बाकी सब दिखाई देते हैं।

जिसकी आँखें नहीं, जो अन्धा है उसके लिए कोई दृश्य नहीं है। उनकी दृष्टि कल्पना है। एक अन्धा कल्पना करता है वैसा हूबहू दूसरा अन्धा नहीं कर पाता। जिसकी आँखें होती हैं जिस पेड़ को वह जैसा देख रहा होता है हूबहू दूसरा भी उस पेड़ को वैसा देख रहा होता। इसलिए जिसको देखकर यह जाना जाता कि चन्द्रमा है। उसे दूसरा भी देखकर जान जाता कि चन्द्रमा है। देखकर जानना जानकारी है तो नहीं देखकर जानना भी जानकारी है। किसी को टटोलने के लिए एकदम निकट जाना होता है। अन्धे संसार के सबसे निकट होते हैं। इतने निकट कि वे संसार को स्पर्श करते हैं। उनका अँधेरा दृष्टि का सन्नाटा होता है। जिसमें स्पर्श के सिवाए कुछ बचा नहीं होता।

बच्चे जो देख रहे थे उसको जान रहे थे। जो नहीं देख रहे थे उसे भी जान रहे थे। आँख में पट्टी बाँधकर खेलने का खेल उन्हें नहीं दिखने का अनुभव सिखा रहा था कि बिना देखे ढूँढो कहाँ हैं।

जारी...

मई अंक की चित्र पहेली का हल

जो		पा	द	प		बै	सा	खी
क	म	ल		न	क्श		र	
र		ना		घ		फ	स	ल
	मो		मी	ट	र			ह
का	र	खा	ना		स	र	दा	र
ग			र	क	म		की	
ज	या	न		थ		क		गि
	न		ए	क		ने	व	ला
झ	र	ना		ली	व	र		स